जम्बु कुमार का वैराग्य नाटक

Notes

(पहला दृश्य)

संचालन :-

बोलिए देवाधिदेव श्री आदिनाथ भगवान की जय हो।

आज यहाँ कुछ सुन्दरी बालिका मण्डल एवं वीतराग विज्ञान पाठशाला के बच्चों द्वारा हीरा सा नाटक आप सबके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। कृपया शांति बनाये रखे और नाटक का आनंद लेवे।

संचालन :

यह कथा जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की है। जहाँ राजगृही नामक धर्म नगरी थी वहा के राजा श्रेणिक एवं सारी प्रजा धर्मपरायण थी वहाँ जिनेंद्र की पूजा, स्वाध्याय, संयम, तप एवं पात्रदानादि के बिना जहाँ श्रावक भोजन तक नहीं करते थे और ऐसी धर्मपरायण प्रजा में सुख शांति स्वयमेव थी क्योंकि कारण जैसा कार्य होता है और नगर के राजा श्रेणिक शत्रुओं

के मान मर्दन में हमेशा तत्पर रहते थे।
उनकी रानी का नाम चेलना था। इसी
नगर में अर्हद्दास और जिनमती
नाम के सेठ - सेठानी रहते हैं।
उनके देवों को पराजित करने
वाला जम्बूकुमार नाम का पुत्र
उत्पन्न हुआ। जम्बूकुमार जन्म से
ही वैरागी और धर्म परायण थे।
आइए देखते हैं उनका वैराग्य।

संचालन:

राजगृही नगरी में अर्हद्दास एवं जिनमती
सेठ - सेठानी के पूर्व दिशा में
उदित सूर्य के समान फाल्गुन मास
के शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा के
शुभ दिन का प्रभाव जम्बूकुमार
के जन्म से चमक उठा। सेठजी
के आनंद का कुछ पार न
रहा। उन्होंने बड़े धूम - धाम
से जन्मोत्सव मनाया। और

घर - घर में मंगल गान कराये।
(सेठजी ने इतना दान दिया कि लेने
वालों की कमी पड़ गयी और
धन का क्षय नहीं हुआ)

आईए देखते हैं बालक जम्बूकुमार की
अपने मित्रों के साथ चर्चा खेलते हुए
चर्चा करते हैं -

(4)

T. O.

Notes (5)

पहला मित्र :-

मित्रों। यह गेंद का खेल खेलने से हमें कितना सुख मिला ?

दूसरा मित्र :- इसमें से हमको सुख नहीं मिल सकता।

3 तीसरा मित्र :- लेकिन मित्र, खेलने में हमको आनंद तो आया ?

(जम्बूकुमार) :- वह तो राग का आनंद था आत्मा का सच्चा आनंद वह नहीं था।

2. दूसरा मित्र :- गेंद में से सुख क्यों नहीं आता।

Notes (6)

~~चौथा मित्र~~ :- (जम्बूकुमार)
गेंद में से सुख क्योंकि उसमें सुख है ही नहीं।

~~3~~ तीसरा मित्र :- क्यों, ऐसा क्यों उसमें सुख क्यों नहीं है?

~~दूसरा मित्र~~ :- (जम्बू) कुमार
क्योंकि वह अजीव है, अजीव में सुख नहीं होता।

पहला मित्र :- तो फिर सुख किसमें है?

~~तीसरा मित्र~~ :- (जम्बू) कुमार
सुख जीव में है।

दूसरा ~~तीसरा~~ मित्र :- जीव और गेंद में क्या अंतर है?

~~चौथा मित्र~~ :- (जम्बू कुमार)
जीव में ज्ञान है, गेंद में ज्ञान नहीं है।

Notes (7)

पहला मित्र :-
तो क्या इस जगत में दो तरह की वस्तुऐं है?

~~दूसरा मित्र~~ (जम्बू) कुमार) :-
हाँ, एक ज्ञान सहित, दूसरी ज्ञानरहित, ऐसी दो प्रकार की वस्तुऐं है।

संचालन :-

देखो तो सही होरे होरे बालक खेलते हुए भी कितनी सुंदर भावना भाते है धन्य है ऐसे बालको को उनके माता-पिता को धन्य है। जिसमें एक राजकुमार कवि था और वह क्या कहता है।
तीसरा मित्र :-

जीव समझना उसको जिसमें होता ज्ञान।
अजीव जानो उसको होय न जिसमें ज्ञान।
जीव-अजीव को जान के कर लो आतमज्ञान।
होगी आत्मज्ञान से पदवी मोक्ष महान।

गत में दो तरह की

ं, दूसरी ज्ञानरहित,
स्तुएँ है।

बालक खेलते हुए भी
है धन्य है ऐसे
ता-पिता को धन्य
कति था और वह

में होता ज्ञान।
न जिसमें ज्ञान।
कर लो आतमज्ञान।
ली मोक्ष महान।

Notes (8) Date

मित्र :-
जीव वस्तु में ज्ञान के सिवा और कुछ भी

मित्र :- (जम्बूकुमार)
जी हाँ, जीव में ज्ञान के साथ सुख है, त्व है, श्रद्धा है, चारित्र है ऐसे तो ार गुण जीवमें है।

मित्र :-
यह गेंद तो अजीव वस्तु है, इसमें ज्ञान ही है तो दूसरा कुछ इसमें होगा की ीं ?

मित्र :-
हाँ, इसमें भी इसके गुण होते है क्योंकि -

ीव या अजीव प्रत्येक वस्तु में गुणों का समूह होता है, गुणों के समूह को ही वस्तु कहते है।"

न :- इस प्रकार जीव अजीव की चर्चा से सभी राजकुमारों को खुशी हुई और वे विचार करते हुए अपने घर की

Notes (9) Date

ओर चले गए।

संचालन :-

धन्य है ऐसे बालकों को जो जन्म से ही ऐसी भावना रखते है और संसार समुद्र से पार हो जाते है।

[दूसरा दृश्य]

संचालन :-
बाल्य अवस्था के बाद अब जम्बूकुमार ने कुमार अवस्था में प्रवेश किया।

एक ओर जम्बूकुमार ध्यान में बैठे हुए है दूसरी ओर उनके माता-पिता उनके विवाह के संबंध में चर्चा कर रहे है।

जम्बूकुमार ध्यान में बैठे है मंत्र णमोकार का चिंतन कर रहे है।

जम्बूकुमार :-
(विचार करते है कि) इस असार संसार में जिनधर्म जीवो को सच्चा मार्ग बताने वाला है ज्ञानीजन हमेशा ज्ञान मार्ग पर चलकर इस संसार रूपी समुद्र को पार कर लेते है अतः मुझे भी उन स्वामियों की तरह इस संसार से पार जाना है भव भोगो को छोड़कर विषय सुख को छोड़कर अतीन्द्रिय आनंद का पान करना है। जिससे मैं भी उस मुक्ति सुंदरी का वरण कर सकूं।

जिनमती :-
हे स्वामी हमारा पुत्र जम्बू कुमार विवाह के योग्य हो गया है हमें उसके योग्य कन्या देख विवाह कर देना चाहिए।

अर्हदास :-
हे प्रिये, मुझे भी ऐसी

चिंता के मारे आजकल नींद नहीं आती मगर किया क्या जाए। हमारे पुत्र के योग्य वधु भी तो होनी चाहिए।

संचालन :-
इतने मे ही अर्हदास के मित्र सागरदत्त अपनी कन्याओं के विवाह का प्रस्ताव लेकर उनके पास आए।

सागरदत्त :-
हे मित्र तुम्हारा पुत्र विवाह के योग्य हो गया है जो अनेकों गुणों से सम्पन्न है। वह मेरी पुत्रियों के लिए योग्य वर है क्योंकि धर्म से सम्पन्न वही सम्पन्न है धर्म रहित धनवान कोई दरिद्री से कम नहीं, और धन रहित धर्मात्मा कोई चक्रवर्ती से कम नहीं. मेरी पुत्रियों के लिए तुम्हारा पुत्र ही श्रेष्ठ वर है।

नहीं आती
ारे पुत्र के
ादिए।

मित्र सागरदत्त
प्रस्ताव लेकर

विवाह के
को गुणों
नयों के
धर्म से
रहित
ऐसा नहीं
ई चक्रवर्ती
के लिए

अर्हदास :- हे ~~सेठ~~ मित्र तुमने तो मेरी समस्या का हल ही कर दिया। मैं भी अभी सेठानी से इसी विषय में चर्चा कर रहा था

संचालन :-

इस प्रकार माता-पिता व सभी लोग जम्बूकुमार की विवाह की चर्चा करते है। इधर महाराजा श्रेणिक के राज्य में क्या होता है आइए देखते है।

संचालन :-

महाराजा श्रेणिक सभा के मध्य में सिंहासन पर सूर्य के समान शोभित हो रहे है उनके समीप अनेक राजा बैठे हुए है तभी विद्याधर का आगमन होता है।

तभी विद्याधर विमान से उतरकर राजा को नमस्कार करते हुए अपने आने का कारण बतलाता है।

(व्योमगति)
विद्याधर :-

हे प्रिय राजन! सहस्त्रशृंग नामका एक उत्तम पर्वत है वहाँ विद्याधरों का वास है उसी पर्वत पर मैं रहता हूं मेरा नाम व्योमगति है। हे राजन! मैं एक आश्चर्यकारी बात कहने आया हूं। मलयाचल पर्वत के दक्षिण भाग में केरल नाम का गाँव है जिसका राजा मृगांक है

उसकी विशालवती नामकी एक कन्या है जो कि धर्म परायण व सुन्दरता की मूर्ति है। मुनिराज के श्री व द्वारा राजगृही के राजा श्रेणिक को उसका वर घोषित किया गया है।

हे स्वामी हंसद्वीप निवासी लेकिन रत्नचूल नामक विद्याधर ने उस सुंदर कन्या को अपने लिए वरने की इच्छा प्रकट की है।

राजा मृगांक ने उसकी बात स्वीकार नहीं की इस कारण वह क्रोधित हो गया है उसने अपनी सेना सजाकर राजा मृगांक का नगर नष्ट कर दिया है और वह किले के अंदर ही युद्ध की तैयारी कर रहे हैं।

अब मैंने आपको सारी जानकारी दे दी। अब आगे क्या करना है ये आपके हाथ में है। आप ही उनकी रक्षा करके उनकी पुत्री का वरण कीजिए अब मुझे जाने की आज्ञा प्रदान करें।

संचालन :-
ये सब सुनकर राजा श्रेणिक एवं सभासद विचार करने लगे कि भूमिगोचरी राजा युद्ध मे विद्याधरो का सामना किस प्रकार करेंगे

और फिर सभी को चिंतित देखकर जम्बूकुमार स्वयं ही रत्नचूल का सामना करने की आज्ञा मांगने लगे।

जम्बूकुमार :-
महाराज आप चिंतित न हो मैं रत्नचूल को हराकर उसे आपके समक्ष प्रस्तुत कर दूंगा।

विद्याधर :- भूमिगोचरी
हे बालक तूने जो कहा वह क्षत्रिय का धर्म है परंतु यह कार्य असम्भव है इसमें तुम्हारी युक्ति नहीं चल सकती क्योंकि केरल देश यहां से सैकड़ो योजन दूर है वहां पहुंचना अशक्य है तो फिर वीर कार्य करने की बात ही कहां रही और रत्नचूल को जीतना अति कठिन

ा श्रेणिक एवं सभी
कि भूमिगोचरी
सामना किस

भी को चिंतित
रत्नचूल का सामना
।

मैं रत्नचूल
समक्ष प्रस्तुत

कहा वह [illegible]
र्य असम्भव है
[illegible] नहीं
केवल देखा
है कहा
वीर कार्य
रही
अति कठिन है

संचालन :-
इस तरह उस विद्याधर ने अनेक प्रकार से रत्नचूल के बल का प्रताप बताया सभी जन सुनते रहे कोई कुछ न बोला परंतु यशस्वी कुमार से रहा नहीं गया। वे वादी प्रतिवादी के समान अनेक तर्क युक्तियों से उत्तर देते हुए बोले -

जम्बूकुमार :-
हे विद्याधर किसी को जाने बिना ऐसे वचन कहना तुम्हें योग्य नहीं है।

संचालन :-
जम्बूकुमार के वचन सुन व्योमगति विद्याधर निरुत्तर रह गया, मानपूर्वक कुमार का पराक्रम देखने ठहर गया। राजा श्रेणिक अत्यन्त संकोच में पड़ गये उनसे कुछ कहते न बना क्योंकि वे जम्बूकुमार को युद्ध क्षेत्र में भेजने के लिए सहमत नहीं थे।

जम्बूकुमार :-
हे स्वामी ! यह कौन सा बड़ा कार्य है यह तो आपके प्रसाद से क्षण मात्र में सिद्ध हो सकता है। सूर्य की बात तो दूर रहो लेकिन उसकी एक किरण मात्र से अंधकार का अभाव हो जाता है मेरे समान बालक भी उस काम को क्षणमात्र में सिद्ध कर सकता है तब फिर आपकी बात का क्या कहना? जिसके पास चारों प्रकार की सेनायें उपलब्ध है।

संचालन :-
राजा श्रेणिक जम्बूकुमार के वचन सुन आनंदित हो उठे, वे कुमार के वचनों पर विश्वास करते हुए कहने लगे।

श्रेणिक राजा :-
हे पुत्रों जाओ और रत्नचूल का मान मर्दन कर कन्या की रक्षा कर विजय पताका फहरा कर आओ !

जम्बूकुमार का युद्धार्थ गमन

संचालन:-

राजा की आज्ञा पाकर जम्बूकुमार आनंद सहित निर्भय हो अकेले ही केरल देश जाने को तैयार हो गए। वे साहसी एवं अपूर्व बल के धनी तो थे ही उन्होंने तत्काल व्योमगति से कहा।

जम्बूकुमार:-

हे विद्याधर जहाँ रत्नचूल है वहाँ मुझे ले चलो।

संचालन:-

विद्याधर ने अपने विमान में जम्बूकुमार को बिठा आकाश मार्ग से शीघ्र केरल देश पहुंचा दिया वहाँ पहुंचते ही सेना का कोलाहल सुन कुमार ने विद्याधर से कोलाहल का कारण पूछा (आवाज करना है लड़ाई की)

व्योमगति विद्याधर:- हे कुमार आपके शत्रु रत्नचूल की सेना डेरा डालकर पड़ी हुई है यह उसी का कोलाहल है रत्नचूल यहाँ आने के कारण से तो परिचित है ही। हे कुमार इसके साथ राजा मृगांक तो किले के भीतर बैठे हैं अनेक विद्याधर रत्नचूल के सेवक हैं इसको जीतना दुर्निवार है।

संचालन:- विद्याधर के वचन सुनते ही कुमार क्रोध में बोले।

जम्बूकुमार:-

हे विद्याधर तुम यहीं विमान ठीक दो मैं रत्नचूल से मिलकर आता हूँ कि रत्नचूल का कैसा अद्भुत बल है।

(परदा गिरना है)

पके शत्रु रत्नचूल
पड़ी हुई है
है रत्नचूल के
से तो आप
कुमार इसके भय
कल के भीतर
रत्नचूल के सेवक
र है।

सुनकरते ही
।

तुम यहीं विमान
मिलकर आता
कैसा अद्भुत
है)

Notes (20)

संचालन:-
तब मृगांक राजा का दूत बनकर कुमार रत्नचूल के पास जाते है-

कुमार:-
हे द्वारपाल भीतर जाकर रत्नचूल को मेरा यह संदेश दे दो कि राजा मृगांक का दूत आया है वह आपसे कुछ शांतिप्रद बात करना चाहता है।

द्वारपाल अंदर जाकर राजा को नमन करके कहता है-

:- हे राजन! राजा मृगांक का आपसे मिलने हेतू द्वार पर खड़ा जो आपके दर्शन कर कुछ बातें करना चाहता है।

राजा:- आज्ञा है।

Notes (21)

संचालन:-
इसप्रकार राजा की आज्ञा पाकर द्वारपाल कुमार को शीघ्र ही भीतर ले आया कुमार निर्भय होकर भीतर चले गए और राजा को नमस्कार किए बिना ही खड़े हो गए। रत्नचूल कुमार को आश्चर्य से देखने लगा और अंदर ही अंदर सोचने लगा।

राजा रत्नचूल:-
यह कैसा दूत है जो राजोचित विनय भी नहीं जानता कुछ कहे बिना खम्भे के समान खड़ा है। मालूम पड़ता है कि कोई देव ही मेरे बल की परीक्षा करने आया है।

संचालन:-
कुमार को देखकर रत्नचूल भी दुविधा में पड़ जाता है।

रत्नचूल:-
(सोचना है) यह देव है या दूत, मित्र

है या शत्रु इसके साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाए चली इसका परिचय पूछते हैं।
आप किस देश के रहने वाले हो और किस काम से मेरे पास आए हो।

संचालन:- तब दूत बने जम्बूकुमार बोले -

जम्बूकुमार:-
मैं नीतिमार्ग का आश्रय करके तुम्हें समझाने के लिए यहाँ आया हूँ।

रत्नचूल:-
हो तुम क्या नीतिमार्ग सिखाने आए हो सिखाओ।

जम्बूकुमार:-
राजा खोटे हठग्राही नहीं हुआ करते दुराग्रह से राजा इस लोक एवं परलोक दोनों ही लोको में निंदा का पात्र और दुख का भाजन होता है।

इस जगत में बहुत सी एक से एक सुंदर कन्याएं हैं। तुम्हें इसकी ही हठ क्यों है। किसी दूसरे की चीज को बलजबरी से लेना सर्वथा अनुचित है। ~~किसी दूसरे की चीज को बलजबरी से लेना सर्वथा अनुचित है।~~
योग्य राजा मिथ्या अभिमान से नहीं अपनी न्याय नीति से सफल होते हैं।

संचालन:-
इस तरह जम्बूकुमार ने हितकारी वचनों के पुष्पों से बनी शीतल माला रत्नचूल को पहनाई परंतु उसे वह तापकारी हो गई।

रत्नचूल:-
हे दुष्ट बालक मेरे यहाँ दूत बनकर आया है अतः तू मारने योग्य नहीं परंतु अब तेरी दूसरी अवस्था भी हो ही नहीं सकती। तू अपने स्वामी के कार्य का विनाशकारक है और बैर का बढ़ाने वाले वचनों को

कहते हुए तुझे जरा भी लज्जा नहीं आती।

तू इतना भी नहीं जानता कि तुझे क्या कहना चाहिए और क्या नहीं
अरे उल्लू की शक्ति नहीं है कि वह सूर्य का सामना कर सके।

तेरे राजा मृगांक या राजा श्रेणिक कोई भी युद्ध में मेरा सामना नहीं कर सकता।

जा अधिक मत बोल मौन रह मेरे साथ जिसे युद्ध करना हो वह आ जावे मेरे सामने। तुम भूमिगोचरी मेरा कुछ नहीं कर सकते।

संचालन :-
इतना कहकर रत्नचूल क्षुब्ध हृदय होते हुए भी शांति से बैठ गया।

जम्बूकुमार :- है रत्नचूल तेरा यह कथन

तेरा अभिमान है यद्यपि काक भी आकाश में उड़ता है परंतु जब वह बाणों से छिद जाता है तब भूमि पर ही आ गिरता है।

संचालन :-
कुमार के ऐसे वचन सुनकर रत्नचूल के क्रोध का ठिकाना न रहा उसने अपने हाथ में तलवार लेकर योद्धाओं को चीखते हुए आवाज दी -

रत्नचूल :-
इस दूत को मार डालो टुकड़े-2 कर डालो।

संचालन :-
जम्बूकुमार के बल से अनभिज्ञ सभी योद्धा अपने-अपने हथियारों का प्रहार करने लगे और जम्बूकुमार लड़ने लगे।

(खड्ग युद्ध)

संचालन:-

रत्नचूल और जम्बूकुमार का घमासान युद्ध हुआ होने लगा। एक तरफ पूरी सेना दूसरी तरफ जम्बूकुमार। जम्बूकुमार अकेले ही उत्तम संहनन के धनी हैं जिसके बल पर उन्होंने सारी सेना का अकेले सामना किया और अंत में कुमार ने रत्नचूल को परास्त कर उसे रस्सी से बांध लिया। और फिर सेना भी इधर-उधर भाग गई।

(परदा गिरता है)

(पाँचवा दृश्य)

इतने में ही एक दूत राजा मृगांक को बुला ले आता है। सभी कुमार का पराक्रम देखकर कुमार का जयघोष करने लगे। तब राजा मृगांक क्या बोलते हैं -

राजा मृगांक :-

कुमार आप धन्य हैं। आप कामदेव सदृश अद्भुत रूप के धारी हो महा बुद्धिमान हो आप की जय हो। आपने क्षत्रिय धर्म के ऐश्वर्य को अच्छी तरह प्रकट किया।

संचालन:-

केरल नगर के राजा की सेना में जीत के नगाड़े बजने लगे तब व्योमगति ने राजा मृगांक का जम्बूकुमार से परिचय कराया।

व्योमगति :- (विद्याधर) राजा मृगांक ये धीर वीर जम्बूकुमार हैं राजा श्रेणिक ने इन्हें आपकी रक्षा हेतु मेरे साथ भेजा था।

मृगांक :-

हे कुमार आप अतुल बल के धनी हो आपकी धीरता एवं वीरता अवर्णनीय है। आपका शान्त रस गर्भित वीररस जगत को आश्चर्य चकित कर रहा है

धन्य हैं। आप
के धारी हो
की जय हो,
के ऐश्वर्य की

ना की सेना
लगी तब व्योमगति
बुकुमार कम से

धीर वीर
रु ने इन्हें
साध भेजा था।

तुल बल के धनी
वीरता अवर्णनीय
गर्भित वीररस
कित कर रहा है

आप साधुवाद के पात्र हो, आप धन्य हो आप धन्य हो।

संचालन:-
इस प्रकार राजा मृगांक कुमार का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें धन्यवाद दे रहे हैं।

मृगांक:-
चलिए कुमार अब महलों में चलिए और हमें आदर-सत्कार करने का अवसर प्रदान कीजिए।

(व्योमगति से) व्योमगति तुम कुमार को लेकर महल में आओ तब तक हम कुमार के स्वागत की तैयारी करते हैं।

संचालन - राजा मृगांक चला जाता है

भी जम्बुकुमार प्राणीघात व आत्मघात दृश्य देखकर पश्चाताप के सागर में डूब जाते हैं और क्या सोचते हैं

जम्बुकुमार:-
अरे रे धिक्कार है मेरी चतुराई को जो दूसरों को तो उपदेश दे पर अपने आत्महित का नाश करे! ऐसे नेत्रों से क्या जिनके होते हुए व्यक्ति गड्ढे में गिर जाए। अरे रे मैं तो सानी मेरे ऊपर तो राज्य का भी भार नहीं था, फिर भी मैंने यह क्या किया जो परोपकार हेतु कषाय में स्वयं जला और हजारों प्राणियों का जीवन नष्ट कर दिया। धिक्कार है ऐसे यश को जो इतने हिंसा कर्म से प्राप्त हो। धिक्कार हो हे चैतन्य प्रभु तुम अपनी प्रभुता को क्यों भूल गये। तुमने कषाय का स्वाद क्यों चखा। धिक्कार हो इस ग्रहस्थ दशा को।

संचालन:-
इस प्रकार कुमार मन ही मन अपनी

स्वूब निंदा गर्हा करते है।

इस प्रकार सभी जम्बूकुमार का गुणगान करने लगे और फिर व्योमगति कुमार को राजा मृगांक के पास ले जाता है।

राजा मृगांक ने अति हर्ष के साथ नाना प्रकार के मणि रत्नों के आभूषण एव सम्मान किया और व्योमगति को आज्ञा दी कि -

राजा मृगांकः- हे कुमार आपने हमारी बहुत सहायता की अब हम अपनी पुत्री का विवाह आपके राजा श्रेणिक के साथ कर सकते है। इसके लिए हम आपके जीवन भर आभारी रहेंगे।

जम्बूकुमार:- नहीं राजन इसमें मैंने क्या किया मैंने तो सिर्फ महाराज की आज्ञा का पालन किया कर आपकी कुछ सहायता की अच्छा तो अब आप मुझे जाने कि अनुमति दे। (परदा गिरता है)।

संचालन:-

जम्बूकुमार व्योमगति विद्याधर के साथ राजगृह आ जाते है राजा श्रेणिक दरबार मे

सभी प्रजा जन जम्बूकुमार की जय हो, जय करते हुए जयनाद करते है।

राजा श्रेणिकः-

(जम्बूकुमार को ह्रदय से लगाता है)

हे कुमार बहुत दिनों जामे से मेरा ह्रदय और मेरी आंखे तुम्हे देखने को तरस गई थी अब बहुत दिनों बाद तुम्हे देखकर मेरा ह्रदय हर्ष से फूला नही समा रहा।

संचालन:-

राजा ने कुमार को अपने निकट सिंहासन पर बैठा लिया और सम्पूर्ण

के साधु
श्रेणिक
जय हो, जय हो
8)
मेरा हृदय
ने को
नों बाद
र्व से
निकट
र संपूर्ण

...ने पूछने लगे।

जम्बूकुमार :- महाराजा, राजा मृगांक कुछ समय बाद यहाँ आकर उनकी पुत्री का विवाह आप से करेंगे ऐसा उन्होंने संदेश पहुँचाया है।

श्रेणिक राजा :- ठीक है कुमार।

परिचालन :- इस प्रकार जम्बूकुमार ने अपने वीरता व साहस का परिचय दिया अब आगे वे सुख पूर्वक रहने लगे तब क्या होते है।

परिचालन :- कुछ दिन बीत जाने पर राजगृही नगर के उपवन में श्री सुधर्माचार्य संत का आगमन हुआ। जैसे ही यह सभी को ज्ञात हुआ तो राजा साहेब, जम्बूकुमार आदि सभी मुनिवर के दर्शनार्थ जंगल में पधारे और वहाँ पूज्य गुरुवरों को अंजुलि जोड़कर नमस्कार करके तीन प्रदक्षिणा देकर वहीं बैठकर धर्मामृत का पान करने लगे।

मुनिराज का उपदेश :-

हे भव्यों! तुम ज्ञानानंद मयी शाश्वत चैतन्यतत्त्व हो ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, प्रभुता, विभुता आदि अनन्त शक्तियों के भण्डार हो। हे धर्मस्नेही वत्सों यह तुम्हारी पूर्व आराधनाओं का ही फल है जो तुम्हें परम पवित्र जिनधर्म मिला सच्चे धर्म की पोषक जिनवाणी और परम पूज्य वीतरागी संत मिले। निजस्वरूप की आराधना से निश्चय रत्नत्रय प्राप्त कर जगत का ज्ञाता दृष्टा रहना ही तुम्हारा स्वरूप है। अपनी शाश्वत प्रभुता का संवेदन करना ही तुम्हारा काम है

राजा श्रेणिक :-

"अहो ! मुझे राजलक्ष्मी, जयलक्ष्मी के साथ-साथ धर्मलक्ष्मी का भी लाभ प्राप्त हुआ है। धन्य हो गया आज मैं, धन्य हो गया। (प्रणाम करने लगते है)

संचालन :-

राजा श्रेणिक तो अपने राजमहल में वापस आ गये। परंतु विरक्त जम्बूकुमार पूज्य गुरुवरों की चरण शरण में बैठे हुए है। वे मुनिवरों की आनंद झरती शांत प्रशांत वीतरागी मुख मुद्रा को एकटकी लगाकर ~~देख रहे है और इतने में मुनिराज का ध्यान भंग होता है और आर्शीष देखते है कि वे क्या उपदेश देते है।~~

निरखते जा रहे है और कुछ देर बाद चैतन्यतत्व को मानो स्पर्श करते हुए मुनिराज की स्तुति करने लगे।

जब मुनिवर आते है (दुदुदि) वैराग्य जगाते है।
परद्रव्यों, परभावों से हमकोवोभिन्न बताते है।

जब मुनिवर आते है
मुनिराज रहे वन में नहीं राग करे तन में।
बारह भावना रहे बस जिनके चिंतवन में ॥
सिद्धों जैसा बनने का मार्ग बताते है।
परद्रव्यों परभावों से हमकोवो भिन्न ~~भिन्न~~ बताते है।

जम्बु कुमार :-

हे मलयागिरि के चंदन की समान शांत प्रभो ! हे समदर्शी गुरु ! हे वीतरागी विभु ! आपको शत शत बार हो ! नमन हो ! हे प्रभु ! मैं कौन हूँ मैं कहाँ से आया हूँ ? मेरा क्या स्वरूप यह कौन सा पुण्योदय है इत्यादि प्रश्न मेरे मन में उठ रहे है इसलिए अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी विभु ! आपसे इनका समाधान जानने की मेरी प्रबल भावना हुयी है।

सुधर्माचार्य गुरुवर :-

(भजन)

Notes Date

भव्य । तुम और मैं पूर्व भव के भवदेव
र भावदत्त नामक दो ब्राह्मण पुत्र थे ।
भव मे मैंने और आपने जिन दीक्षा अंगीकार
आराधना की पर चारित्र का वरण नहीं
। तब भवदेव का जीव मैं तेरे सामने
ा हूँ । और तुम भवदत्त के जीव हो जो
स्वर्ग से विद्युन्माली देव पर्याय से
कर सेठ अर्हद्दास के पुत्र हुए
।

जम्बुकुमार का वैराग्य
(मुख से अपने पूर्वभव का)

लक :-
जम्बुकुमार पहले से ही तो आराधक थे
। परम पूज्य मुनिराज का उपदेश
। वे संसार को जड़ वैभव को सड़े हुए
के समान और सुंदर काया को
ान की राख के समान अनुभव करते
। उन्हें जगत असार भासित
लगा । उनका मन जिनदीक्षा
लिए तैयार हो गया और वे पूज्य
रूवर के समक्ष हाथ जोड़कर जिन-

Notes Date

दीक्षा की प्रार्थना करने लगते हैं ।

जम्बुकुमार :-
हे जगत-उद्धारक करुणासिंधु प्रभु । मैं इस संसार एवं सांसारिक भावों से थक चुका हूँ । इसलिए मुझे परम आनंद दायिनी जैनेश्वरी दीक्षा देकर अनुगृहीत कीजिए ।

सुधर्माचार्य :-
हे भव्य यदि तुम्हारे मन मे जिनदीक्षा की तीव्र उत्कंठा है तो तुम अपने घर जाकर अपने माता, पिता, बंधुवर्ग से सम्मति लेकर एवं उनके प्रति अपने अपराधो को क्षमा करके आओ । तभी तुम कर्मक्षयकारी आनन्ददायिनी दीक्षा के पात्र होओगे ।

संचालक :- (जम्बुकुमार मन मे विचारते हैं):-

जम्बुकुमार :-
पूज्य आचार्यवर की आज्ञा का उल्लंघन करना तो योग्य नहीं है । घर

नही जाने की हठ करना भी योग्य नही। इसलिए मुझे गुरु- आज्ञा को शिरोधार्य कर घर जाना चाहिए।

संचालक :- इस प्रकार मन मे विचार करके जम्बुकुमार गुरु को नमस्कार कर घर की ओर आ रहे है परंतु वैरागी, ज्ञान के धनी विरक्त जम्बुकुमार के मन मे एक ही धुन सवार है कि "मैं घर से शीघ्र वापिस आकर जिनदीक्षा लूँगा।

(पर्दा गिरता है) [आठवां दृश्य]

संचालक :- घर पहुँचकर विरक्त कुमार उदास हो एकांत स्थान मे बैठ गये। वहाँ उनकी माता जिनमती तो पुत्र की विजय सुनकर फूली नही समा रही थी, लेकिन पुत्र को उदास देखा तो वे कुछ समझ नही पायी। माता जिनमती अपने पुत्र के सिर पर हाथ फेरते हुए कुमार से पूछती है -

(माता) जिनमती :- बेटा। तुम इतने उदास ... आज तो तुम विजयश्री प्राप्त करके ... तो फिर ये प्रसन्नता के बदले उदास ... पुत्र ?

जम्बुकुमार :- हे माता! अब मुझे ... संसार मे रहना एक क्षण भी ... है। मुझे संसार, देह और भोगों ... त्यागकर शीघ्र ही जिनदीक्षा ... है। अब मैं अपने पाणी पात्र मे ... हुआ आहार ही ग्रहण करूँगा। ... मैं वन खण्डादि मे रह ... आनंद मे केलि करूँगा। यही ... सुखदायिनी है माँ!

माता :- (काँपती हुयी आँखो मे ...) बेटा! ऐसा वज्रपात कैसे ... अकस्मात और अप्रासंगिक क्यों ... हो? क्या किसी ने तुम्हारी आज्ञा ... की? या तुमसे कुछ कठोर ... है? आखिर ऐसा क्या हुआ ...

जयश्री की खुशी के बदले सीधे ही जिनदीक्षा लेने की ठान ली ?

बालक :- तब कुमार ने श्री सुधर्माचार्य गुरुवर के मुख से सुना अपने पूर्वभव का वृतांत अपनी माता को कह सुनाया। पुत्र की पूर्वजन्म की चर्चा सुनकर माता जिनमती के अंदर भी धर्मबुद्धि जाग उठी। और आज के समय में माता-पिता छोटे बच्चों को मोबाइल फोन, टी.वी. गेम इन चीजों में लगाए रखते ऐसे में बच्चे धर्म से वंचित हो जाते हैं। जम्बुकुमार के माता-पिता ने उन्हें बचपन से जैनधर्म की शिक्षा दी। आईए आज हम और आप भी संकल्प करें कि हम भी बच्चों में संस्कार डालें और धर्म का मार्ग बताये और आगे बढ़ने की प्रेरणा करें।

जिनमती अपने चित्त को शांत करके घर अर्हद्दास के पास जाकर संपूर्ण समाचार

सुना देती है लेकिन सेठ जी यह समाचार सुनते ही मूर्छित हो जाते हैं कुमारादि सभी जनों ने शीतल जल एवं पवनादि के उपचार द्वारा सेठजी की मूर्छा दूर करते हैं परंतु तीव्र मोहोदय से वे हाहाकार के शब्द कहकर विलाप करने लगते हैं उनके आकुलता पूर्ण विलाप ने सभी के हृदयों को द्रवित कर दिया परंतु वैरागी जम्बुकुमार पर उसका कुछ भी असर नहीं पड़ा। पिता अर्हद्दास अपने पुत्र को समझाते हुए कहते हैं

पिता अर्हद्दास :- बेटा अभी तुम छोटे बालक हो। अभी तुम जिनदीक्षा के स्वरूप को नहीं जानते हो। बेटा तुम्हारा कोमल शरीर है उसमें नग्न दिगम्बर रहना भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, मनुष्य, तिर्यंच और देवों द्वारा किये गये उपसर्गों को सहन करना और जंगल में धीरता-वीरता पूर्वक

कंकड़ और काँटों से व्याप्त भूमि मे रहना
होता है ये सब तुमने देखा ही नहीं
है। तुम इन कष्टों को कैसे सहन
कर सकोगे ? जरा तुम शांति
से विचार तो करो। पुत्र ! पूर्वाचार्यों
ने तो प्रथम सम्यग्दर्शन सहित देशव्रतों
को पालने की आज्ञा दी है जब देशव्रतों
मे दृढ़ता आ जावे फिर महाव्रतों को
अंगीकार करना ऐसा मार्ग बतलाया है
हे पुत्र तुम तो जिनदीक्षा लेने की
[illegible] कर रहे हो। अभी तो तुम
घर मे ही रह कर साधना करो
जिद छोड़ दो, पुत्र! छोड़ दो।

संचालक :-
जम्बुकुमार पिता जी के वचनों
शांतिपूर्वक सुन ही रहे थे और विचार
रहे थे जिनदीक्षा धारण करना
[illegible] असाध्य कार्य नहीं है
फिर पिताजी को मधुर वचनों से
संबोधित करते हुए क्या बोले ?

जम्बुकुमार :-
हे पिताजी। बाह्य वस्तुएँ
दुःख की कारण नहीं होती। आत्मिक
अतीन्द्रिय आनंद मे रमने वाले को क्या उपसर्ग
क्या परिषह ? इसलिए हे तात। आप मोह
मेरे वीतरागी मार्ग की अनुमोदना कीजिए
और मुझे आज्ञा दीजिए।

संचालक :- पिता अर्हद्दास ने कुमार को दृढ़
जानकर अपने मन को शांत कि
और एक चतुर सेवक को एकांत मे
बुलाते है और उससे कहते है

पिता :- सेवक तुम शीघ्र ही जाकर सागर
दत्त आदि श्रेष्ठियों को समाचार [illegible]
कि जम्बुकुमार संसार से विरक्त होने
के कारण जिनदीक्षा लेने को तैयार [illegible]

सेवक :-
अरे रे ! ऐसा समाचार मुझे देना पड़ेगा।
मैं कैसे कहूंगा ? अरे रे धिक्कार है ऐसी
पराधीनता को।

य वस्तुएँ सु
। आत्मिक
क्या उपसर्ग
आप मोह
ीडना कीजिए
ार को छुड़
को शांत कि
एकांत में
ते हैं
जाकर सागर
समाचार दो
रकृत हो ला
को तैयार
मुझे देना पड़े
कार है ऐस

चालक :- सेवक घबराये हुये चित्त से सागरदत्त श्रेष्ठी के सन्मुख पहुँचा और नीचा मुख करके निःचेष्ट खड़ा हो गया। श्रेष्ठी ने आने का कारण पूछा परंतु उसके मुख से कुछ भी शब्द नही निकल पा रहे है। पुनः श्रेष्ठी के पूछने पर सेवक खेद खिन्नता के साथ कुछ धीरे-धीरे स्वर मे बोलना प्रारंभ करता है

सेवक :- " अरे रे। आप जैसे सज्जनो का समागम बड़े भाग्य से मिलता परंतु रे दैव। तुसे मंजूर नही हुआ हमारा बड़ा दुर्भाग्य है कि अकस्मात ऐसे शुभ कार्य मे विघ्न आ पड़ा।

सागरदत्त :-
अरे सेवक। ये क्या कह रहे हो? कैसा दुर्भाग्य और कैसा विघ्न? बोलो शीघ्र बोलो। हम तुम्हारे गूढ़ रहस्य युक्त वचनों को कुछ समझ नही पा रहे है।

सेवक :-
अरे रे। इन कन्याओ के दुर्भाग्य की बात मुझे कहनी पड़ रही है। हे श्रेष्ठी। कुमार का मन जिनदीक्षा लेने को तैयार है। अतः उन्होने विवाह करने से इंकार कर दिया है। उनके माता-पिता ने उन्हे बहुत समझाया पर वे किसी भी तरह से विवाह को तैयार नही हुये है।

सेठानी :-
स्वामी क्यो न हम सभी जम्बूकुमार के पास चलकर अनुनय-विनय करके उन्हे मनाने का प्रयत्न करे?

सागरदत्त :-
प्रिये " जब माता-पिता के ही सब प्रयास विफल हो गये। तब हम जाकर क्या करेंगे। क्या चरम शरीरी कुमार के वैराग्य को भी बदला जा सकता है? मुझे तो यह असंभव लगता है फिर हमें मंगलमयी परिणाम की तो हमें अनुमोदना करनी चाहिए।

सेठानी :- (दुखी होकर) यदि कुमार कुछ काल, संसार में रुककर हमारी पुत्रियों के सौभाग्य तिलक बनते तो कितना अच्छा होता। अब इस लोक से उन जैसा वर हम कहाँ से लायेंगे। हाय! कैसी भाग्य विडम्बना है।

सागरदत्त :- होनहार के आगे किसका वश है? अतः शोक छोड़कर पुत्रियों के हित का विचार करो। जब उन्हें यह समाचार मिलेगा तब उन पर क्या बीतेगी। अतः चलो, प्रथम तो हम उन्हें सांत्वना देते हुए उन्हें इस समाचार से अवगत करायें।

→ (पर्दा गिरता है) ←

संचालक :- माता-पिता अब पुत्रियों के कक्ष में जाते हैं और उन्हें इस समाचार के बारे में बताते हैं।

~~सागरदत्त~~ सेठानी :- हे पुत्रियो! तुम सभी ने पूज्य सुप्रभा आर्यिका जी

के सानिध्य में वस्तुस्वभाव को समझा है। प्रत्येक वस्तु नित्य रहकर भी पलटती है। परिणमन स्वभाव में विचित्रता होती है कभी मंदता, कभी तीव्रता, कभी रागरूप तो कभी वीतराग रूप परिणमन होता है। विवेकीजन इष्ट-अनिष्ट संयोग-वियोग रूप परिणामों में हर्ष विषाद नहीं करते।

पुत्री पद्मश्री :- हे ~~माता~~! अकस्मात इस तत्व वस्तुस्वरूप के प्रतिपादन करने का क्या आशय है? अभी कोई स्वाध्याय या तत्व चर्चा का प्रसंग तो है नहीं? क्या श्रेष्ठि पुत्र ने दूत के साथ कोई वीतरागी सिद्धांतों के रहस्य का संदेश भेजा? मैं आपके प्रतिबोधन का मर्म नहीं समझ पा रही हूँ ~~पिताजी~~ माताजी।

सागरदत्त :- हे पुत्रियो! तुम्हारी शंका के निवारणार्थ ही मुझे जबरदस्ती कहना पड़ रहा है कि जम्बुकुमार जी ने

अपने माता - पिता आदि के द्वारा अनेक प्रकार से समझाये जाने पर भी संसार में फंसना योग्य नही समझा। और वीतरागता के पथ पर चलने का निर्णय ले लिया है इसलिए हे प्रिय पुत्रियों। तुम इस मंगलगर्भित अमंगल समाचार को सुनकर व्यथित न होओ। हम सभी जम्बू कुमार से जाकर मिलेगे।

संचालक :- इतना सुनते ही पुत्रियों की माँ पद्मावती रुदन करने लगती है सागरदत्त उन्हे समझाते हुए कहते है।

सागरदत्त :- हे प्रिये! पद्मावती! तुम अपना धैर्य न खोओ। तुम तो माता हो, तुम्हें धीरज से काम लेना चाहिए एवं पुत्रियों को धैर्य बंधाना चाहिए। जगत मे बहुत सुयोग्य लड़के है हम दूसरे सुंदर, सुयोग्य वरो के साथ

अपनी पुत्रियों का धूमधाम से विवाह करेंगे।

हे पुत्रियों। तुम खूब चिंतित मत होओ। हम प्रथम प्रयास तो कुमार को ही मनाने का करते है हमें विश्वास है कि जम्बु कुमार मान जाएँगे। यदि उन्होंने दृढ़ निर्णय ले ही लिया होगा तो हम लोग और दूसरे सुंदर सुयोग्य वर के साथ तुम्हारा विवाह कर देंगे।

संचालक :- पिता के वचनों को सुनते ही चारों कन्याएँ एकदम बोल उठती है।

कन्यायें :- (चारों) हे तात। हे माता। आपने ऐसी उच्च कुल के अयोग्य बात का विचार कैसे कर लिया। हम सभी ने मन ही मन यह निश्चय कर लिया है कि हमारे पति तो जम्बुकुमार ही हैं। अन्य का तो हम स्वप्न में भी विचार नही कर सकते हैं क्योंकि शीलवान स्त्री का स्वामी तीनों लोकों मे एक ही होता है।

(पर्दा गिरता है)

संचालक :- पिता सागरदत्त अपनी चारों पुत्रियों के दृढ़ निश्चय को जानकर श्रेष्ठी जी जम्बूकुमार के पिता अर्हद्दास के यहाँ पहुँचे और जम्बूकुमार के संबंध में संपूर्ण जानकारी जानने हेतु उनसे पूछने लगे।

सागरदत्त :- हे मित्र! कुमार को अचानक ऐसा विचार आने का क्या कारण है? उन्होंने लघुवय में इतना कठोर कदम उठाने की कैसे सोची?

अर्हद्दास :- हे मित्र, कुमार जब केरल युद्ध से वापिस अपने नगर को आये, तो नगर के उद्यान में श्रुतकेवली सुधर्माचार्यजी से अपने पूर्वभवों का वृत्तांत श्रवण करते ही उनका हृदय वैराग्य के लिए उछल पड़ा है।

सागरदत्त :- हे मित्र! आप एक बार कुमार को समझाएँ कि वे मात्र शादी कर लें, बस उसके बाद चाहे अगले ही दिन वीतरागी पथ की ओर चले जाएँ, हमारी सहर्ष स्वीकृति है।

संचालक :- वैराग्य रस से सराबोर मुक्ति कांता के अभिलाषी को संसार देह भोगों की आकांक्षा लेशमात्र नहीं, पर भी माता-पिता के अति आग्रहपूर्वक बारम्बार समझाने पर जम्बूकुमार ने इस बात पर के लिए अपनी मौन स्वीकृति प्रदान कर दी। और इधर अर्हद्दास जी को कुमार के विवाह से प्रभात वैराग्य दिख रहा था तो दूसरी ओर उन्हें कन्याओं के सौन्दर्य एवं व्यवहार कुशलता पर पूर्ण विश्वास था अतः प्रसन्नता पूर्वक तत्क्षण विवाहोत्सव का आयोजन किया गया। समस्त उत्सव एवं पंचपरमेष्ठीओं की साक्षीपूर्वक कुमार का चारों सुकन्याओं के साथ विवाह संपन्न

करा दिया गया। चारो क्षत्रीयो ने वर-वधु का रत्नमयी अलंकारो से यथोचित सम्मान किया। उसके बाद कुमार की बारात अपने महल को लौटी। द्वार पर बारात आने पर माता-पिता एवं परिजनो ने वर वधु का मंगलगान एवं रत्न दीपो द्वारा स्वागत करते हुये महल प्रवेश कराया।

(पर्दा गिरता है) (खुलता है)

संचालन :- इधर महल मे बारात आने के बाद कुमार अपने कक्ष मे एकांत स्थान मे स्वरूप आराधना के लिए प्रयत्नरत हो गये और इधर चारो वधुऐ कक्ष मे कुमार की प्रतिक्षा कर रही है कुमार को न आता देख वे कुमार के कक्ष मे प्रवेश करती है और देखती है ~~देखते है~~ क्या देखती है। आईए

(कुमार का वैराग्य चिंतवन)

(चारो वधुओ का कुमार को प्रणाम करना)

पद्मश्री :- प्रणाम स्वामी। हे देवराज आज के ऐसे अवसर पर रूठने का क्या कारण है

रूपश्री :- आप जरा नेत्रो को खोलिए, हमारी आपके चरणो मे भावपूर्ण विनय है

कनकश्री :- बोलिये स्वामी कुछ तो बोलिये हम चारो आपके वचन श्रवण कर अपने कर्ण एवं मन को पवित्र करना चाहती है

विनयश्री :- इतनी प्रतिक्षा न कराइए। बोलिये स्वामी कुछ तो बोलिए। ~~अपने~~ ~~नेत्रो~~ को

संचालक :- अत्यंत आग्रह करने पर कुमार ने अर्द्धोन्मीलित नेत्रो से चारो वधुओ को

ऐसे देखा जैसे धर्मगुरु अपने शिष्यों को देखता है और वे मन में विचार करते हैं कि प्रभातकाल में फलीभूत होने वाली मेरी भावनाओं से ये चारों अपरिचित हैं ऐसा जानते हुये कुमार अकस्मात् बोले।

जम्बुकुमार :-

हे भद्राओ! मैं आप लोगों से रूठा नहीं हूँ और अपरिचित व्यक्तियों से रूठने का कुछ कारण भी तो नहीं होता।

पद्मश्री :-

हे नाथ! तो फिर ऐसे अवसर पर आपके इस प्रकार के व्यवहार का क्या कारण है

संचालक :-

कुमार विरक्त हो मौन योगी की तरह बैठ गये। पुनः पद्मश्री बोली।

रूपश्री :-

हे स्वामी! हम सभी आपकी भावना जानना चाहते हैं

जम्बुकुमार :-

हे देवियो! यह तो मानव को वीतराग के पथ पर चलकर अतीन्द्रिय आनन्द का प्रचुर स्वसंवेदन कर मुक्ति प्राप्त करने का मंगल अवसर है अतः मैं तो जैनेश्वरी दीक्षा से भानु उदय कर मंगलमयी प्रभात करना चाहता हूँ यही मेरी भावना है

संचालन :-

बुद्धिमती एवं रूप लावण्य से भरी हुई चारों वधुओं ने पुनः राग भरी बातें की।

किसी ने उनके पैरों को पकड़ा, किसी ने हाथों को, किसी ने उन्हें हिलाते हुए एवं किसी ने नाना प्रकार की चेष्टा करते हुए उनसे कहा।

...श्री :-

...श्री :- हे नाथ आप हमारे रुप लावण्य को प्रसन्नता पूर्वक देखो तो सही। हमारे ... कोमल हाथों को स्पर्श करो तो सही। ... अपने नेत्रों को तो खोलिये और ... प्यारी वाणी को सुनिये !

...श्री :- हे स्वामी । हम सभी ने आप को निहार कर ऐसा अनुभव किया है कि मानो स्वामी के विशाल नेत्रों में चंचलता रहित अत्यंत गम्भीर समुद्र लहरा रहा है

हे मुक्तिपती हम चारों अनाथ दासियो ... नाथ हमें अपने सत्संग से कृतार्थ कीजिए।

(जम्बुकुमार पद्मासन लगाकर बैठ गये)

...श्री :- हे ! चरमशरीरी नाथ ! आप जैसे ... में रंगे पगो साक्षात् द्रव्य भगवान

को अपने पति के रूप में पाकर हम चारो प्रमुदित है हमारी स्त्री पर्याय सार्थक हो गयी।

विनयश्री :- हम सब भी एक दिन सिद्धशिला के अधिकारी हो। हम सभी आपके चरणारविंद का दासत्व स्वीकार करती हैं हमे अंगीकार करके कृतार्थ कीजिए।

जम्बुकुमार :- हे भद्रो। हे भव्यो आप सभी के विरक्त एवं आत्मसाधना के परिणामों को देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। आप चारों धन्य हो कि जगत में जिस समय विषय भोगों एवं राग रंग की वार्ता चलती है। उस अवसर में तुम्हारा चित्त अध्यात्म चर्चा को चाहता है मेरा परिणाम भी इन विषय भोगों एवं संसार के दुःखो से उदास है और मैं प्रातः काल की पावन वेला में ही पूज्य श्री सुधर्माचार्य जी के चरणारविंद में जाकर पावन जैनेश्वरी दीक्षा धारण करूंगा !

संचालक :-
कुमार के इस प्रकार कहते ही चारों वधुओं के मुख से सहज ही निकल पड़ा ।
हे स्वामिन आपकी मंगलमयी परिणति जयवंत वर्ते । हम आपके वैराग्य को जानकर हर्षित है ।
तब

कनकश्री :-
हे स्वामिन हम सब भी आपके सानिध्य में आत्महित के अभिलाषी हैं, परन्तु हम अबोध बालायें कुछ समय तक आपका सत् समागम चाहती है। आप कुछ समय ठहरकर हमें प्रतिबोधित करने के बाद दीक्षा धारण करें ।

जम्बूकुमार :-
हे भद्रे! तुम्हारा विचार कथंचित् उचित है। परन्तु आत्मार्थी

कभी भी निमित्तों की प्रतीक्षा नहीं करते। उन्हें एक-एक समय रत्नों से अधिक कीमती लगता है इसलिए हमें एक क्षण का भी विलम्ब नहीं करना चाहिए और रही बात विषय भोगों और गृहस्थी में रहने की तो इस सन्दर्भ में महापुरुष कहते है -

कीचड़ को लगाकर धोना क्या
और कूद आग में रोना क्या ?

विनयश्री :-
हे नाथ । आपका कहना ठीक है परन्तु अभी तक हम सभी कोमलांगों ने समस्त इन्द्रियों की अनुकूलता देखी (भोगी) है।
आत्मसाधना करना अत्यंत दुर्धर कार्य है । हम आप के साथ वन में जाकर कठोर तप कैसे कर सकते है । पहले हम अणुव्रत को धारण करेंगे । फिर साथ दीक्षा ग्रहण करेंगे तब तक रुकना उचित है।

...ा नहीं करते हैं
...से अधिक
...एक क्षण
...चाहिए और
गृहस्थी में
महापुरुष
...या
...ा ?
...हना ठीक है
...भी कामलांगी
अनुकूलता देखी
अपर्यंत
...प के साथ
...तप कैसे

Notes

...रः हे बुद्धिमते। भले ही तुम्हारा कहना उचित है पर समुचित नहीं है। सीता जी एवं अंजना जी ने कहा धीरे-धीरे अभ्यास किया था। यह बात सत्य है कि चारित्र मोह क्रम-क्रम से जाता है परंतु दर्शन मोह एक साथ जाता है। इसलिए जिसके परिणाम धीरे-धीरे आत्म अभ्यास करने हो तो करें परंतु मेरा चित्त तो अब एक क्षण मात्र भी रुकने को तैयार नहीं है। अरे धिक्कार है ऐसे भोगों को जिसका फल नरक निगोद है। और इन चार गति, चौरासी लाख योनियों से मेरा आत्मा थक चुका है।

...जी :- हे स्वामिन! सच्ची उदासीनता तो उसका नाम है

Notes

जहाँ वीतरागी होकर पर पदार्थ इष्ट-अनिष्ट भासित न हों। यदि स्वर्ग मोक्ष के लोभ से व नरक निगोदों के भय से विषय भोगों से उदासीन हो जाओगे तो यह द्वेष गर्भित उदासीनता होगी। जो कि अकार्यकारी है अतः कुछ समय ठहर कर जिन दीक्षा धारण करोगे तो उचित ही होगा नाथ!

जम्बुकुमार :- (मुस्कुराते हुए) हे आगम कुशले! यह बात सही है कि कोई पदार्थ इष्ट-अनिष्ट नहीं है और द्वेष रूप उदासीनता सच्ची उदासीनता नहीं है परन्तु मैं तुमसे अथवा भोग सामग्री से द्वेष करके, मोक्षादि के लोभ से उदासीन नहीं हुआ हूँ। मेरा मन आत्मा के अतीन्द्रिय आनंद का स्वसंवेदन करने के लिए प्रचुर रूप उठा है।

विनयश्री :-

हे नीतिस नाथ क्षमा करें इस अल्प वय में भोगों को छोड़कर जाने में तो आपकी भावुकता आश्रित होती है और भावुकता में जीव का उत्कर्ष होता है उससे भी जल्दी पतन हो जाता है।

इसलिए हे स्वामिन आप धर्मिस हो, मैं आपको क्या नीति सिखा सकती हूँ। आप मुझे क्षमा करें। भावुकता या जल्दबाजी के कारण हमारे आचरण में किंचित भी शिथिलता हुई तो यह परम पवित्र जिन शासन कलंकित हो जाएगा।

जम्बूकुमार :-

हे गंभीर चित्ते। तुम्हारा गंभीरतापूर्ण विचार प्रशंसनीय है परन्तु भावुकता की क्या पहचान है जिनके पास सचमुच आत्म प्रतीति है उनके जीवन में शिथिलता नहीं होती।

एक 8 वर्ष का बालक यदि आत्मानुभवी हो वह भी गंभीर है और 60 वर्ष का व्यक्ति यदि आत्मज्ञानी नहीं है तो वह भी भावुक है।

रूपश्री :- (ठुनककर) (अन्य रानियों से बोली)

तुम लोगों को क्या हो गया है क्या तुमने तपस्या करने के लिए विवाह किया है?

अरी सखी! इस निर्दयी पुरुष की खुशामद से क्या लाभ. अंधे के सामने नाचने से क्या, बहरे के आगे गाने से क्या?

इस तरह तो यह अवश्य ही दीक्षा ग्रहण कर लेंगे।

नहीं नहीं जरा स्वामी को दृष्टि उठाकर हमारे रूप सौंदर्य को तो देखने दो।

अरे

दे आत्मानुभवी है
और 60 वर्ष
नहीं है तो

रानियों से बोली

गया है क्या
लिए विवाह किया

रदेची धुरन्त की

अंधे के सामने
आगे गाने से

अवश्य ही दीक्षा

को दृष्टि उठाक
देखने

धिक्कार है देखो तो कैसे बाल ब्रह्मचारी यतीश्वर की तरह नासाग्र दृष्टि में बैठे हैं। अरे रे ! धिक्कार है तुम्हारे पतिव्रत्व को। क्या तुम भूल गई गृहस्थ धर्म के विवेक को। अरे आत्मा-आत्मा और वैराग्य की बातें छोड़ो।

स्वामिन् वैराग्य की बातें भूल जाइए। हम सभी आपको वन में नहीं जाने देंगी। दीक्षा नहीं लेने देंगी।

कुमार :- हे विह्वल चित्ते ! है विषय भोगों में रंजायमान बुद्धि को धारक, तुम्हारे तीव्र मोह का उदय आसक्ति होता है जो तुम्हें आनंदमयी आत्मा की बात नहीं सुहाती। नरक निगोद व विषय-भोगों से दूर ले जाने वाली साक्षात् मुक्तिदाता ऐसी चर्चा

तो रत्नत्रय का कारण है। क्या यह चर्चा तुम्हें नहीं सुहाती।

जैसे आत्म प्रतीति से शून्य वह राजा मरकर विष्टा का कीड़ा हुआ इसी तरह तुम भी कीड़े-मकोड़े की तरह अनंत कष्टों को भोगने के लिए तैयार हो जाओ। क्या तुम अब भी इन दुखों को उठाना पसंद करोगी।

तीनों रानियाँ :- (विरक्त होकर) नहीं स्वामिन् नहीं हम से तो ये दुख नहीं सहे जायेंगे।

स्पष्टी :- (लज्जित होकर) हे नाथ ! क्षमा करें मेरा अभिप्राय आपको ठेस पहुँचाना नहीं है लेकिन एक बात अवश्य पूछना चाहती हूँ।

Notes (66)

कि तीर्थंकरों एवं चक्रवर्ती आदि ने भी तो विवाह किया था। इस प्रकार हम भी गृहस्थ धर्म अपनाकर आत्महित करें। तो क्या अनुचित होगा।

जम्बूकुमार:-

हे बुद्ध चित्ते! उनके परिणामों को तो वे ही अनुभव कर सकते हैं लेकिन मेरा मन अब इन विषय-भोगों को स्वीकार नहीं कर पा रहा है अतः मैं तो वन में जाकर जंगल में जैनेश्वरी दीक्षा धारण करना चाहता हूँ।

संचालन:-

इस प्रकार जम्बूकुमार ने शुहास्यरण में सभी पत्नियों को समाधान करते हुए संतुष्ट कर दिया।

कुमार:-

हे भद्रे! धन्य वे नहीं

Notes (67)

हैं जिन्हें गृहस्थी बसानी पड़े। अपितु धन्य वे हैं जिन्हें गृहस्थी की आवश्यकता ही न हो।

रानियाँ:-

(आँखों में आँसू भरकर)

हे नाथ! अब आप ही बताइए कि अब हम क्या करें।

जम्बूकुमार:-

हे आर्याओं! तुम्हारे परिणामों व्यर्थ में ही खेद-खिन्न हो रहे हैं। तुम व्याकुल मत होओ। अपनी विशक्ति को वृथा न गँवाओ। शान्त होओ। शान्त होओ। तत्त्व विचार करो!

तीनों रानियाँ:-

परन्तु स्वामिन्! हमको अभ्यास करने के लिए कुछ तो समय दीजिए।

Notes

नी पड़े । अपितु
गृहस्थी की
।

रडर)

ही बताइए कि अब

Notes

Date

जम्बुकुमार :- अभ्यास कैसा अभ्यास ?
... हमने तुम्हें सुकमाल की बात
कही थी। उसने कैसा अभ्यास किया
था? क्या माता के पेट में नौ-नौ
महीने उलटे मुँह लटके रहकर वहाँ की
वेदनाओं को सहने का अभ्यास
किया था? क्या तुमने सुहागन होने
का वैसा अभ्यास किया था? क्या
तुम विधवा होने का अभ्यास करोगी?
इसलिए सावधान होकर अपने परिणामों
की पवित्रता बढ़ाओ। विरक्ति बढ़ाओ
तुम्हारा हित अवश्य ही होगा।

संचालक :- इतना समझाने के बाद भी
जब जम्बुकुमार नहीं माने सब मान
अपने अभ्यास निष्फल समझ
आपस अपने कक्ष के बाहर और ये
सब बातें भी माता कक्ष के द्वार
रही थी और सुन रही थी
इतने में ही एक घटना घटती

Notes

Date

है आईए देखते हैं [ध्यानाकर्षण]
(पर्दा गिरता है)

संचालक :- इधर कुमार के साथ स्त्रियाँ
वार्तालाप कर रही थी उधर विद्युच्चर
नाम का चोर ... 500 चोरों का
सरदार था ... चोरी करने निकला
था। कोतवाली में अपनी रक्षा करते हुए
वह सेठ अर्हद्दास के घर चोरी
करने आया, जहाँ कुमार का शयनालय
था वहाँ आ पहुँचा। कुमार का स्त्रियों से
वार्तालाप हो रहा था, उसको सुनकर
विचारता है कि पहले इस कौतूहल को
देखूँ कि रत्नों को चुराऊँ।

यही निश्चय कर लिया पहले सब सुनना
चाहिए फिर धन को चुराना चाहिए

चोर :- यह कैसा आश्चर्य है कि कुमार तो भोग के समय योग कर रहा है, राग के बदले वीतरागता की बातें हो रही हैं ये राज्य वैभव, भोग सामग्री, चार-चार रानियाँ, उनकी राग भरी चेष्टाएँ भी इस कुमार को डिगा नहीं पा रही। अहा आश्चर्य महा आश्चर्य इसका क्या कारण है मैं अवश्य जानकर रहूँगा।

संचालक :- इस प्रकार चोर स्वामी व रानियों की चर्चा को सुनकर स्वयं को कैसे धिक्कारता है

चोर :- अरे! जिसके पास न्याय-नीति से उपार्जित धन संपदा एवं भोग है वह तो उसकी ओर आँख उठाकर नहीं देखता और मैं अन्याय से व चोरी से धन लूटना चाहता हूँ मुझे धिक्कार है।

संचालक :- ऐसे विचारों में मग्न विद्युच्चर जम्बुकुमार के कक्ष की ओर खिड़की में बैठा हुआ है। माता भी व्याकुल चित्त से घूम रही है और वह देखती है कि कोई व्यक्ति बैठा हुआ है और उसके पास पहुँचती है और उसे देखकर घबरा जाती है। अब चोर उनसे क्या कहता है।

चोर :- (माता को प्रणाम करता है) हे माते! मैं विद्युच्चर चोर हूँ चोरी करने आपके यहाँ आया था मगर आज कुमार एवं रानियों की चर्चा सुनकर मैंने चौर्य कर्म त्याग दिया है अब तो मेरी कुमार से मिलने की भावना है।

माता :- हे वत्स! तुझे जो चाहिए सो मेरे घर से ले जा!

चोर :- हे माता! मुझे आज धन लेने की

Notes (72)

चिंता नही है। मैं बहुत देर से यह कौतुक देख रहा हूं। इसका कारण क्या है सो कह। अब तू मेरी धर्म बहन है, मैं तेरा भाई हूं।

माता :- (धैर्य धारणकर) मेरा यह कुल दीपक है जिसका आज ही विवाह हुआ है परन्तु यह विरक्त है और तप लेना चाहता है। सूर्य उदय होते ही यह नियम से तप ग्रहण करेगा।

संचालक :- माँ जिनमती के वचन सुनकर विद्युच्चर के मन मे दया पैदा हो गई।

चोर :- हे माता। मैंने सब हाल जान लिया तू भय न कर मुझसे उस कार्य मे जो हो सकेगा वह करूंगा। मैं वशीकरण मंत्र तंत्र सब जानता हूँ।

Notes (73)

मैं अवश्य ही उसे समझाकर घर रहने को तैयार कर लूंगा।

संचालक :- माता जिनमती तो यह चाहती थी कि किसी प्रकार से पुत्र घर मे रह जाये। और उन्होंने तुरन्त एक युक्ति बनाई कि ये तुम्हारे मामा है जो कि बहुत दिनों से परदेश गये हुए थे। आते ही वे आये है और तुमसे मिलना चाहते है। इसप्रकार माता विद्युच्चर चोर को मामा बनाकर जम्बू स्वामी से मिलाने ले गयी है।

जम्बुकुमार :- हे माता (विनय से) यहाँ उस समय आने का क्या कारण है?

माता :- तुम्हारे विवाह का उत्सव सुनकर मामाश्री यहाँ पधारे है और वे तुमसे और तुम्हारी रानियों से भेंट करना चाहते है।

जम्बुकुमार :- हे माता मेरे मामा को शीघ्र यहाँ बुलाओ।

संचालक :- जम्बुकुमार मामाश्री को देखकर उठ जाते हैं और आदर सहित स्नेह पूर्ण होकर गले मिलते हैं अब विद्युच्चर चोर किस प्रकार कुमार को समझाते हैं

मामा :- (चोर) हे कुमार तुम बड़े भाग्यवान हो, ऐश्वर्य वान हो कामदेव के समान तुम्हारा रूप है तुम शांत हो, सूर्य के समान तेजस्वी हो। तुम्हारे पूर्व पुण्य के उदय से संपूर्ण भोग सामग्री तुम्हें प्राप्त हुयी है इसलिए तुम इसको दीर्घ काल तक उपभोग करो।

जम्बुकुमार :- हे मामा! मैं इस प्रभु इन्द्रिय सुख के लिए तिर्यंच आदि गति में जाकर दुख नही उठाना चाहता हूँ मैं कदापि इन्द्रिय सुख नही चाहता हूँ।

(चोर) मामा :- हे कुमार! आपने श्री प्रभु की दिव्य देशना तो सुनी होगी जिसमें दो धर्म का वर्णन है गृहस्थ व मुनिधर्म। तो तुम गृहस्थ धर्म का पालन क्यों नही करते हो। मुनिधर्म का तो बहुत कठिन है अभी तो तुम्हारी आयु भी बाकी है जब आपकी वृद्धावस्था हो तब आत्म साधना करना। महा मुनिधर्म की साधना करना।

जम्बुकुमार :- हे मातुल! संसारी जीवों की दशा को देखकर उसका निरूपण दो प्रकार से किया गया है। जो जीव विषय भोगों में रचे-पचे हैं उन जीवों को

आत्महित के लिए अणुव्रत आदि का उपदेश दिया गया है मैं तो चरमशरीरी हूँ मेरे तो इस भव में संपूर्ण कर्मों का क्षय होना है तो क्यों न मैं सभी संयम धारण कर प्रचुर स्वसंवेदन को प्राप्त होऊँ।

(विद्युच्चर) मामा :- हे बेटे। शिवकुमार भी एक वस्त्र सहित अपने ही उद्यान में रहे थे वे भी भिक्षा भोजन करते थे।

जिससे सभी सुखी थे, आप भी ऐसा ही करिये।

जम्बुकुमार :- हे मातुल, जब मैं सकल संयम को धारण करने में समर्थ हूँ, तब फिर एक या आधे वस्त्र की जरूरत ही क्या है? वास्तव में गृहस्थी जो जंजाल है, अनंत दुःखों की भट्टी है, जहाँ निरन्तर

संकल्प - विकल्पों की ज्वालायें धधका करती हैं। उसमे यह जीव आत्मा के भान रहित होकर झुलसता है।

संचालक :- इस प्रकार मामा विद्युच्चर ने जम्बु कुमार को कई कथाओं के माध्यम से संसार में रहने के लिए बहुत प्रयत्न किया पर कुमार ने भी उन्हे कई कथाओं के माध्यम से संसार के दुखो को बताया और कहा

जम्बुकुमार :- जो संसार विषय सुख होता तीर्थंकर क्यों त्यागे।
काहे को शिवसाधन करते संयम सो अनुरागे ॥
[~~[illegible]~~]

संचालक :- अहो धन्य है वे वैरागी जम्बु कुमार जिनके सत्संग से एवं चर्चा से चारो वधुओ का और विद्युतचर का

रागरंग भी उतर गया एवं वे भी सोभ को तजकर, विरक्त चित्त होती हुई अपने को कृतार्थ अनुभव कर रही थी।

वैराग्यमयी चर्चा में रात्रि का अंधकार कहाँ नष्ट हो जाता है इधर सूर्य की पहली किरण फूटती है और चारों वधुऐं किस प्रकार वैराग्य को धारण करती हैं

कनकश्री :-
(हाथ जोड़कर) हे स्वामिन! हमने सात फेरे खाकर आपके साथ चलने की जो प्रतिज्ञा की थी उसे मुक्ति पर्यंत निभाना चाहते हैं

विनयश्री :-
हमें भी आज्ञा दीजिए कि हम भी श्री जिनेंद्र देव द्वारा बताये हुए मार्ग पर चल अपनी आत्मा का कल्याण करें।

रूपश्री :-
हम अब उस मार्ग पर चलने की उत्कृष्ट अभिलाषी हैं आप आज्ञा देकर कृतार्थ कीजिए।

जम्बुकुमार :-
(प्रसन्नचित्त होकर) तुम सबके मंगलमय परिणाम जयवंत हों। हे भद्र, हे विरक्त चित्ताओं तुम सबके अंदर यह मंगलमयी [illegible] सादि अनंत काल के लिए शाश्वत हो।

[बारहवां दृश्य]

संचालन :- जब पुत्र वधुऐं भी कुमार को न रोक सकीं और स्वयं भी उस पथ पर चलने लगीं तो माता जिनमती का क्या हाल हुआ

माता :- (रोना है फूट-फूट कर)
"हाय रे हाय! ये मैंने क्या किया मुझे इन चारों कन्याओं पर जरा भी दया नहीं आयी। हाय हाय! इन चारों

की उम्र अब कैसे बीतेगी ? मैंने अपने हठाग्रह मे इन चारों का जीवन बर्बाद कर दिया।

हे पुत्रियो! तुम्हारी असली अपराधिन मैं हूं। सारा अपराध मेरा है।
हे प्रभु! मेरे बेटे को सद्‌बुद्धि दो। मेरी ये फूल जैसी बहुएं वन-खण्डादि मे तप को कैसे धारण करेंगी!

संचालक :- इतना कहकर माता अपनी सुध भूल जाती है तब पुत्र, बहुएं माता की किस प्रकार को संबोधित और सेवा करती है)

पद्मश्री :- (माता को आसन पर बिठाती है) (अश्रु पोंछती है)

हे माताश्री! हमारा सौभाग्य है कि हमे

ऐसे ज्ञानी ध्यानी पुरुष का समागम मिला है। यदि किसी विषयासक्त पुरुष का समागम मिल गया होता तो विषय भोगों मे हम अपना कीमती भव हार गयी होती!

कनकश्री :- हमे अनंत भवों मे सच्चे देव-शास्त्र गुरु मिले थे हमने बाह्य द्रव्यलिंग भी धारण किया ग्यारह अंग का ज्ञान भी किया परमेष्ठीराज जैसी विरक्ति, आज जैसा मंगलमय परिणाम कभी नही पाया। हमारा जिनशासन का पाना, सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का और हमारे अनंत भवों का पाना यों ही व्यर्थ चला गया।

विनयश्री :- आज हम सभी धन्य हो गयी है हमारा यह विवाह सफल हो गया है मात्र एक रात्रि के समागम से उनकी आत्मा के तेज के प्रभाव से हम चारों

Notes (82) Date

का चिन्त विषय भोगो से होकर आत्म आराधना मे लग गया है।

रूपश्री :- हे माता जी। ये विवाह हमारे लिए वरदान साबित हुआ है। अब हम शीघ्र ही स्त्री पर्याय का छेदकर, सकल संयम को धारण कर मोक्ष प्राप्त करेंगी। हे माता आपका किंचित भी कोई अपराध नहीं है।

पद्मश्री :- हमारा तो पहले से ही नियोग था। कुमार के साथ हम भी यह जानते थे और सभी जानते थे कि हमने उनकी वैराग्य बोधक चर्चा से अपनी विषय वासना से विरक्त होने के लिए ही उनसे विवाह किया था।

कनकश्री :- हम चारों दासियां आपके

Notes (83) Date

चरणों की अधिक सेवा न कर सकीं इसका हमे खेद है हम आपसे क्षमा मांगते है परन्तु आत्महित के सिवाय और कोई उत्तम मार्ग नहीं है।

संचालक :- इतना सुनते ही माता विह्वल होकर रोने लगती है और चारों वधुओं को दीक्षा लेने से रोकने का प्रयत्न करती है।

माता :- हे बेटा कम से कम तुम तो दीक्षा धारण न करो। मैं अब किसके सहारे रहूंगी। तुम्हारे ही साथ तत्वचर्चा करते हुए स्थितिकरण को प्राप्त होऊंगी और तुम भी घर मे रहकर आत्म आराधना करना।

संचालक :- उस तरह माता जिनमती सब प्रकार से चारों वधुओं को समझा

न करूं सभी
आपसे क्षमा
प्रभु सिवाय
ली है।

ी आज्ञा लिकर
र चारों वधुएं
ा प्रयत्न

कम तुम भी
अब जिससे
उत्पन्न हुआ
न हो जाऊंगी।
रकर आत्म

ज्यरी माता
आगमन भी

लेकिन चारों वधुऐं माता से क्या बोलती है।

रूपश्री :- हे माता! आप ही कहो क्या हमें शोभा देगा कि हमारे स्वामी वन खण्डादि में वास करे और हम महलों में।

कनकश्री :- आप शोक छोड़कर हमें भवोदधि तारक जिनशासन की शरण में जाने दो।

पद्मश्री :- हम स्त्रीलिंग छेदकर सिद्ध शिला में हमारे स्वामी के सहज ही नहीं अनंत सिद्धों के सहज वास करेंगे है माते। हमें आज्ञा दो।

संचालक :- इस प्रकार सभी के चित्त में वैराग्य जागृत होता है माता का

मोह भी धीरे धीरे [तरह तरह से] कुछ गलता है ... पर्यंत, शाश्वत आत्मिक आनंद के ... श्री जम्बूकुमार के लिए वह मंगल ... उदित हो ही गया। जिसकी ... चिर प्रतीक्षा थी। मंगल प्रभात ... मौन खुला तो किस रूप में खुला।

जम्बूकुमार :- (माता से)

हे मेरे शरीर की जन्मदायिनी माता की आत्मा। अब मैं अपनी ... ऐसी निजात्मा के पास जाता हूं मुझे आज्ञा दो।

(पिता से) :- हे इस शरीर के जनक की आत्मा अब मैं अपने शाश्वत जनक के पास जाता हूं मुझे आज्ञा दीजिए।

(स्त्रियों से) :- हे इस शरीर को रमाने

वाली रमणियों अब मैं अपनी त्रिकाली रमणी के पास जाता हूँ। मुझे आज्ञा दो।

संचालक :-

इस जम्बुकुमार ने माता-पिता एवं पत्नियों से जिनदीक्षा की आज्ञा माँगी।

पिताजी :-

हे कुमार तुम धन्य हो तुम्हारा राग अब अनादि अनंत काल के लिए अस्त हो चुका है। लेकिन हे पुत्र ठहरिये हम तुम्हें मना नहीं करते, यथा-योग्य विधि के साथ राजा सहित संपूर्ण नगरवासी तुम्हारे साथ वन को चलेंगे।

संचालक :-

अहो! यह वीतरागियों का पथ कितना अलौकिक है अनादिकाल से अनंत भव्य आत्माओं ने अपने

जीवन का ध्येय था लक्ष्यबिंदु इसी पथ को बनाया होगा।

इस असंयमी, असंगी निरालंबी व स्वावलंबी मार्ग की कल्पना मोहियों को कैसे हो सकती है कदापि नहीं

परन्तु वैराग्य रस से ओत-प्रोत जम्बु स्वामी की दीक्षा की घड़ी आ ही जाती है और यह सूचना राजा श्रेणिक को दी जाती है तब राजा श्रेणिक नगर में भेरी बजवाते हैं और नगरवासी सहित राजा श्रेणिक कुमार की उत्तम भावना की अनुमोदना करते हुए सेठ अर्हद्दास के महल में पालकी लेकर जाते हैं और जम्बुकुमार को वस्त्रादि से अलंकृत कर दीक्षा के लिए पालकी में बैठाकर वन की ओर ले जाते हैं

सभी जम्बुकुमार की वैराग्य की अनुमोदना करते हुए वन में पहुँचते हैं और वहाँ विराजमान

सुधर्माचार्य के निकट जिन दीक्षा अंगीकार करने की आज्ञा माँगते हैं

जम्बुस्वामी :- हे स्वामिन्! हे नाथ! हे गुरूवर मेरा चित्त संसार की असारता में आस्रवों की अशुचिता से थक चुका है इसलिए हे प्रभुवर मैं शीघ्र ही आत्मिक अतीन्द्रिय प्रचुर स्वसंवेदन से आत्मा को विभूषित करने के लिए जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार करना चाहता हूँ। अतः हे नाथ! मुझ पर कृपा कर अनुगृहित कीजिए।

संचालक :- इस प्रकार जम्बु कुमार ने अब २८ मूलगुणों को ग्रहण करते हुए परम दिगम्बर दशा को प्राप्त किया जम्बुस्वामी मुनिराज को अनेक प्रकार तप करते हुए वर्षों बीत गये तब माघ सुदी सातमी के दिन आधा

प्रहर दिन बाकी था तब श्री जम्बु स्वामी मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न दशा की प्राप्ति हो गयी।

मगध से लेकर मथुरा तक अन्य देशों मे विहार करते हुए फिर केवली महाराज मथुरा पधारे और आठों कर्मों से रहित होकर निर्वाण दशा को प्राप्त हुए।

बोलिए महावीर भगवान की जय! जम्बूस्वामी जी के निर्वाण की जय!